http://www.developindiagroup.co.in/

एम.पी.पी.एस.सी.

मध्य प्रदेश राज्य सिविल सेवा

प्रारम्भिक परीक्षा अध्ययन सामाग्री

पूर्णतः संशोधित एवं अद्यतन अध्ययन सामाग्री

सामान्य अध्ययन

प्रश्नपत्र – 1

Prepared by
Develop India Group

भारतीय इतिहास एवं संस्कृति

- पुरातात्विक स्रोतों के अंतर्गत सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्रोत के रुप में अभिलेख को स्वीकार किया जाता है। प्राचीन भारत के अधिकतर अभिलेख पाषाण शिलाओं, स्तम्भों, ताम्रपत्रों, दीवारों तथा प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण किए गए हैं।
- सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख मध्य एशिया के बोगजकोई नामक स्थान से लगभग 1400 ई.पू. में मिले हैं। इस अभिलेख में इंद्र, मित्र, वरूण और नासत्य आदि वैदिक देवताओं के नाम मिलते हैं।
- भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक के हैं जो लगभग 300 ई.पू. के हैं।
- मास्की, गुज्जर्रा, निट्टूर एवं उदेगोलम से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है।
- अशोक के अधिकतर अभिलेख ब्राह्मी लिपि में है। केवल उत्तर–पश्चिमी भारत के कुछ अभिलेख खरोष्ठी लिपि में हैं।
- लघमान एवं शरेकुना से प्राप्त अशोक के अभिलेख यूनानी तथा आरमेइक लिपियों में हैं। इस प्रकार अशोक के अभिलेख मुख्यतः ब्राह्मी, खरोष्ठी, यूनानी तथा आरमेइक लिपियों में मिले हैं।
- प्रारम्भिक अभिलेख प्राकृत भाषा में लिखे गए किंतु गुप्त तथा गुप्तोत्तर काल के अधिकतर अभिलेख संस्कृत में लिखे गए।
- कुछ गैर–सरकारी अभिलेख जैसे यवन राजदूत हेलियोडोरस का बेसनगर (विदिशा) से प्राप्त गरुण स्तम्भ लेख, जिसमें द्वितीय शताब्दी ई.पू. में भारत में भागवत धर्म के विकसित होने के साक्ष्य मिलते हैं।
- भारत में सबसे अधिक अभिलेख मैसूर में मिले हैं।
- सर्वप्रथम 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि में लिखित अशोक के अभिलेखों को पढ़ा था।
- सिक्के के अध्ययन को 'मुद्राशास्त्र' कहते हैं। पुराने प्राचीन काल में सिक्के अधिकतर तांबा, चांदी, सोना और सीसा धातु के बनते थे।
- पकाई मिट्टी के बने सिक्कों के सांचे ईसा की आरम्भिक तीन सदियों के मिलते हैं। इनमें से अधिकांश सांचे कुषाण काल के पाए गए हैं।
- आहत सिक्के या पंचमार्क सिक्के भारत के प्राचीनतम सिक्के हैं जो ई.पू. पांचवीं सदी के हैं। इनको ठप्पा मारकर बनाया जाता था। आहत मुद्राओं की सबसे पुरानी निधियां (होर्ड्स) पूर्वी उत्तर प्रदेश और मगध में मिली हैं।
- आरम्भिक सिक्के अधिकतर चांदी के होते थे जबकि तांबे के सिक्के बहुत कम मात्रा में होते थे। ये सिक्के 'पंचमार्क सिक्के' कहलाते थे। क्योंकि इन सिक्कों पर पेड़, मछली, सांड, हाथी, अर्द्धचंद्र आदि आकृतियां बनी होती थी।
- प्राचीन काल में सर्वाधिक सिक्के मौर्योत्तर काल में मिले हैं जो विशेषतः सीसे, चांदी, तांबा व सोने के हैं। सातवाहनों ने सीसे तथा गुप्त शासकों ने सोने के सर्वाधिक सिक्के जारी किए। सर्वप्रथम लेख वाले स्वर्ण सिक्के हिन्द–यूनानी (इंडो–ग्रीक) शासकों ने चलाए।
- कुषाण कालीन गांधार कला पर विदेशी प्रभाव दिखायी देता है जबकि मथुरा कला पूर्णतः स्वदेशी मानी जाती है।
- भरहुत, बोधगया और अमरावती की मूर्ति कला में जनसाधारण के जीवन की सजीव झांकी मिलती है।

स्मारक एवं भवन

- उत्तर भारत के मंदिर 'नागर शैली' में दक्षिण भारत के 'द्राविड़ शैली' में तथा मध्य भारत के मंदिर 'वेसर शैली' में बनाए जाते थे।
- दक्षिण पूर्व एशिया व मध्य एशिया से प्राप्त मंदिरों तथा स्तूपों से भारतीय संस्कृति के विदेशों में प्रसार पर प्रकाश पड़ता है।

चित्रकला

- अजंता के चित्रों में मानवीय भावनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति मिलती है। चित्रकला में 'माता और शिशु' तथा 'मरणासन्न राजकुमारी' जैसे चित्रों से गुप्तकाल की कलात्मक उन्नति का पूर्ण आभास मिलता है।
- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो इत्यादि स्थलों से प्राप्त मुहरों से उनके धार्मिक रीति–रिवाजों का ज्ञान होता है।
- बसाढ़ से प्राप्त मिट्टी की मुहरों से व्यापारिक श्रेणियों का ज्ञान होता है।

साहित्यिक स्रोत

- साहित्यिक स्रोत दो प्रकार के हैं :
  1. धार्मिक साहित्य
  2. लौकिक साहित्य या धर्मेत्तर साहित्य
- धार्मिक साहित्य में ब्राह्मण तथा ब्राह्मणेत्तर ग्रंथ की चर्चा की जा सकती है। ब्राह्मण ग्रंथों में वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराण तथा स्मृति ग्रंथ आते हैं।
- ब्राह्मणेत्तर ग्रंथों में बौद्ध एवं जैन साहित्यों से सम्बंधित रचनाओं का उल्लेख किया जाता है।
- लौकिक साहित्य में ऐतिहासिक ग्रंथों, जीवनियां, कल्पना प्रधान तथा गल्प साहित्य का वर्णन किया जाता है।
- **वेद :** ब्राह्मण साहित्य में सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद को माना जाता है। वेदों के द्वारा प्राचीन आर्यों के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है।

http://www.developindiagroup.co.in/

- वेदों की संख्या चार है – *ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद* तथा *अथर्ववेद*।
- **ऋग्वेद :** इसकी रचना को 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. के बीच माना जाता हैं। ऋक् का अर्थ होता है छंदों एवं चरणों से युक्त मंत्र।
- ऋग्वेद में कुल दस मंडल एवं 1028 सूक्त हैं। ऋग्वेद के मंत्रों को यज्ञों के अवसर पर देवताओं की स्तुति हेतु ऋषियों द्वारा उच्चरित किया जाता था।
- ऋग्वेद में पहला एवं दसवां मंडल सबसे अंत में जोड़ा गया है। ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में चारों वर्णों का उल्लेख मिलता है।
- **यजुर्वेद :** यज का अर्थ है 'यज्ञ'। इसमें यज्ञों के नियमों एवं विधि विधानों का संकलन पाया जाता है।
- यजुर्वेद के मंत्रों का उच्चारण करने वाला पुरोहित 'अध्वुर्य' कहलाता है। इसके दो भाग हैं – शुक्ल यजुर्वेद एवं कृष्ण यजुर्वेद।
- यह पांच शाखाओं में विभक्त है : (1) काठक, (2) कपिष्ठल, (3) मैत्रायणी, (4) तैत्तिरीय, (5) वाजसनेयी।
- यजुर्वेद के प्रमुख उपनिषद कठ, इशोपनिषद, श्वेताश्वरोपनिषद तथा मैत्रायणी उपनिषद हैं।
- यजुर्वेद गद्य एवं पद्य दोनों में लिखे गए हैं।
- **सामवेद :** 'साम' का शाब्दिक अर्थ है गान। इसमें मुख्यतः यज्ञों के अवसर पर गाए जाने वाले मंत्रों का संग्रह है। इसे 'भारतीय संगीत का मूल' कहा जा सकता है।
- सामवेद में मुख्यतः सूर्य की स्तुति के मंत्र पाए जाते हैं। सामवेद के मंत्रों को गाने वाला 'उद्गाता' कहलाता था।
- सामवेद के प्रमुख उपनिषद छंदोग्य तथा जैमिनीय हैं तथा मुख्य ब्राह्मण ग्रंथ 'पंचविश' को माना जाता है।
- **अथर्ववेद :** इसकी रचना सबसे अंत में हुई थीं। इसमें 731 सूक्त, 20 अध्याय तथा 6000 मंत्र पाए गए हैं। इसमें आर्य एवं अनार्य विचारधाराओं का समन्वय मिलता है।
- अथर्ववेद में परीक्षित को 'कुरुओं का राजा' कहा गया है।
- इसमें ब्रह्म ज्ञान, धर्म, समाजनिष्ठा औषधि प्रयोग, रोग निवारण, मंत्र, जादू–टोना आदि अनेक विषयों का वर्णन है।
- अथर्ववेद का एक मात्र ब्राह्मण ग्रंथ गोपथ ही है। इनके उपनिषदों में मुख्य हैं मुंडकोपनिषद, प्रश्नोपनिषद तथा मांडूक्योपनिषद।
- **संहिता :** चारों वेदों का सम्मिलित रूप।
- **वेदत्रयी :** ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद के सम्मिलित संग्रह।

ब्राह्मण ग्रंथ

- इनकी रचना संहिताओं की व्याख्या हेतु सरल गद्य में की गई है। ब्रह्म का अर्थ है 'यज्ञ'। अतः यज्ञ के विषयों का प्रतिपादन करने वाले ग्रंथ 'ब्राह्मण' कहलाते हैं।
- ऐतरेय ब्राह्मण में राज्याभिषेक के नियम तथा कुछ प्राचीन अभिषिक्त राजाओं के नाम दिए गए हैं।
- शतपथ ब्राह्मण में गांधार, शल्य, कैकेय, कुरु, पांचाल, कोशल, विदेह आदि राजाओं के नाम का उल्लेख मिलता है।

आरण्यक

- इन्हें ब्राह्मण ग्रंथ का अंतिम भाग माना जाता है।
- इसमें कोरे यज्ञवाद के स्थान पर चिंतनशील ज्ञान के पक्ष को अधिक महत्त्व दिया गया है। जंगल में पढ़े जाने के कारण इन्हें 'आरण्यक' कहा जाता है।
- उपलब्ध आरण्यक कुल सात हैं :

1. ऐतरेय
2. शांखायन
3. तैत्तिरीय
4. मैत्रायणी
5. माध्यन्दिन वृहदारण्यक
6. तल्वकार
7. छांदोग्य

उपनिषद

- उप का अर्थ है 'समीप' और निषद का अर्थ है 'बैठना'।
- उपनिषद उत्तरवैदिक काल की रचनाएं हैं। इनमें हमें आर्यों के प्राचीनतम दार्शनिक विचारों का ज्ञान मिलता है। इसे पराविद्या या आध्यात्म विद्या भी कहते हैं।
- भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' मुंडकोपनिषद से लिया गया है। उपनिषदों में आत्मा, परमात्मा, मोक्ष एवं पुनर्जन्म की अवधारणा मिलती है।
- उपनिषदों की कुल संख्या 108 मानी गई है किंतु प्रमाणिक उपनिषद 12 हैं।

वेदांग

- इनकी संख्या छह है। 1. शिक्षा 2. कल्प 3. व्याकरण 4. निरुक्त 5. ज्योतिष 6. छंद

http://www.developindiagroup.co.in/